



## International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2015; 1(3): 22-24

© 2015 IJSR

www.sanskritjournal.com

Received: 27-02-2015

Accepted: 16-03-2015

इन्दु डिमोलिया

एम. फिल. शोध छात्रा विशिष्ट संस्कृत  
अध्ययन केन्द्र जवाहरलाल नेहरू  
विश्वविद्यालय नई दिल्ली-११००६७

### शान्ति की अवधारणा : बौद्ध धर्म के विशेष सन्दर्भ में

इन्दु डिमोलिया

आज के युग में सबसे बड़ी आवश्यकता क्या है ? व्यक्ति को, परिवार को, समाज को, देश को, विश्व को और पूरे ब्रह्माण्ड को सबसे अधिक आवश्यकता है 'शान्ति' की । मनुष्य आरम्भ से संघर्ष अथवा युद्ध की समाप्ति और शान्ति की खोज करता है । कभी-कभी तो वह युद्ध शान्ति के लिये ही करता है । संसार में जब तक शान्ति नहीं होगी, तब तक समाज तथा राजनीति में अशान्ति फैली ही रहेगी । इतिहास हम यदि ध्यान से पढ़े, तो शायद हर युग में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता शान्ति ही रही है । इसका कारण भी स्पष्ट है कि संसार में हमेशा अशान्ति पैदा करने वाले तत्व सक्रिय रहे हैं । परन्तु हम अशान्ति को जीवन का अनिवार्य तत्व तो नहीं समझ सकते, उससे हार तो नहीं सकते । मनुष्य अशान्ति पर शान्ति की विजय के लिये हजारों सालों से प्रयास करता रहा है । मानव को अपने जीवन में शान्ति किस प्रकार मिल सकती है? विश्व मानव एवं मानव समाज के मध्य (परस्पर) शान्ति किस प्रकार स्थापित की जा सकती है? मानव अपने दुःख से कैसे मुक्त हो सकते हैं । दुःख का अन्त सम्भव है कि नहीं । विश्व में पति-पत्नी, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, भाई बहन, गुरु-शिष्य (शिक्षक-छात्र) इत्यादि के बीच (परस्पर) किस प्रकार शान्ति स्थापित हो सकती है इत्यादि विषय पर बौद्ध धर्म में विस्तार से विचार किया गया है ।

'शान्ति' शब्द "शम" धातु से बना है जिसके कई अर्थ हैं यथा-बन्द करना, दूर करना, बुरा प्रभाव हटाना, मना करना, प्रसन्न होना, शमन करना या प्राण हरना इत्यादि ।

शान्ति का तात्पर्य केवल अस्थिर राजनीति का संतुलन ही नहीं है, वह एक मानसिक अवस्था है जो बैर की भावनाओं से रहित और उस निर्वैयक्तिक और सार्वजनिक प्रेम से परिपूर्ण है जिसे बौद्ध परिभाषा में 'मैत्री' कहते हैं । भगवान बुद्ध ने संसार को विश्वशान्ति का उपदेश दिया था । बौद्ध धर्म एवं दर्शन का सबसे अधिक महत्व उसके शान्ति सम्बन्धि उनके दर्शन एवं निष्कर्ष में है । "जिस प्रकार बादल बिना किसी भेदभाव के सर्वत्र वर्षा करते हैं, वैसे ही तथागत सभी पर समान अनुकम्पा करते हैं । तथागत के मन में ऊँच और नीच के प्रति समान भावना रहती है । उनका शिक्षण इतना पवित्र है कि कुलीन और अकुलीन तथा धनी और निर्धन में भेदभाव नहीं करता । उनकी शिक्षाएं उस जल की तरह हैं जो पृथ्वी से आकाश तक छोटी-बड़ी जितनी भी चीजे हैं सभी को हृदयंगम कर लेती है । ये उस आकाश की तरह हैं, जहाँ स्त्री-पुरुष, लड़के-लड़कियाँ, शक्तिसंपन्न तथा दुर्बल एवं छोटे-बड़े सभी के किये पर्याप्त स्थान है । एवं सभी शान्तिमय वातावरण में मैत्रीभाव से रहते हैं । बौद्ध धर्म मन में शान्ति का संचार करके उसका बाहर प्रसारण करना चाहता है । इस प्रकार उनका काम अन्दर से शुरु होकर बाहर फैलता है । बौद्ध धर्म के पास मैत्री का ही सबसे बड़ा बल है जो तटस्थ है और सम्पूर्ण विश्व को अपने में समेटे हुये है । बौद्ध धर्म न केवल भारत उपमहाद्वीप अपितु विश्व में शान्ति के लिये एक महान शक्ति सिद्ध हुआ है । भगवान बुद्ध की शान्ति, आत्मबलिदान, करुणा और उदारता संबंधी नीति का महाभारत में भी उल्लेख मिलता है । यथा-

अक्रोधेन जयेत् क्रोधं असाधुं साधुना जयेत् ।

जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम् ॥

प्रस्तुत श्लोक का भावार्थ यह है कि क्रोध को अक्रोध से जीते और बुरे को भले से । कजूस को दान से और असत्य को सत्य से जय करें ।

बौद्ध धर्म के पास केवल एक ही तलवार है-प्रज्ञा की तलवार और उसके केवल एक ही शत्रु है-अज्ञान । बौद्ध धर्म और शांति का संबंध-कारण कार्य का संबंध है । बौद्ध धर्म के उदय या उत्थान से पहले विश्व के कई देशों में शांति नहीं थी । वहां के निवासी अत्यन्त युद्धप्रिय और हिंसा स्वभाव के थे । बाद में इन देशों में जो शांतिप्रियता आई वह बौद्ध धर्म के शांतिवादी उपदेशों के प्रभाव से हुई । इस प्रकार बौद्ध धर्म शांति का संबंध आकस्मिक न होकर अनिवार्य है । विश्व-शांति की स्थापना में बौद्ध धर्म अतीत में एक योगदान देने वाला साधन रहा है ।<sup>१</sup>

भगवान बुद्ध को एकांत में ध्यान करते समय उनके मन में यह विचार आया कि यह संसार बहुत कष्ट

Correspondence

इन्दु डिमोलिया

एम. फिल. शोध छात्रा विशिष्ट संस्कृत  
अध्ययन केन्द्र जवाहरलाल नेहरू  
विश्वविद्यालय नई दिल्ली-११००६७

में पड़ा है। कोई जन्मता है और मर जाता है। एक स्थिति से च्युत होता है और दूसरी में उत्पन्न हो जाता है। इससे बाहर निकलने का रास्ता कैसे जाना जाए? तब सही चिन्तन के द्वारा और प्रज्ञा जगाकर उन्होंने यह जान लिया कि दुःख का निदान क्या है? मानव का दुःख कैसे दूर किया जा सकता है? भगवान बुद्ध ने मानव के दुःख को जान लिया। भगवान बुद्ध ने दुःखों का मूल कारण अविद्या को माना है। तदनन्तर उन्होंने यह भी जान लिया कि नामरूप के निरोध से विज्ञान, विज्ञान के निरोध से नामरूप, नामरूप के निरोध से छह इन्द्रियां, छह इन्द्रियों के निरोध से स्पर्श, स्पर्श के निरोध से वेदना, वेदना के निरोध से तृष्णा, तृष्णा के निरोध से उपादान, उपादान के निरोध से भव, भव के निरोध से जन्म, जन्म (जाति) के निरोध से बुढ़ापा, मृत्यु, शोक, विलाप इत्यादि सारे दुःखों का निरोध हो जाता है।

भगवान बुद्ध के सारे उपदेश चार आर्य सत्यों में निहित है। भगवान बुद्ध का मत है कि संसार दुःखों से परिपूर्ण है, दुःखों का कारण है, दुःखों का अन्त संभव है, दुःखों के अन्त का मार्ग है। ये चार आर्य-सत्य बौद्ध धर्म के सार हैं। भगवान बुद्ध ने चार आर्य सत्यों की महत्ता को स्वयं मज्झिम निकाय में उल्लेख करते हुए कहा है-इस चार आर्य-सत्यों से अनासक्ति, वासनाओं का नाश, दुःखों का अन्त, मानसिक शान्ति, ज्ञान, प्रज्ञा, तथा निर्वाण सम्भव हो सकते हैं।<sup>12</sup>

भगवान बुद्ध का मत है कि संसार दुःखों से व्याप्त है। इस दुःख का अन्त संभव है। भगवान बुद्ध ने दुःख निरोध की अवस्था को अपनाकर के लिये एक मार्ग की चर्चा की है। इस मार्ग को दुःख निरोध मार्ग कहा जाता है। चूँकि इस मार्ग के आठ अंग हैं इसीलिये इस मार्ग को **अष्टांगिक मार्ग** कहते हैं। तथागत गौतम बुद्ध ने सारनाथ में दिये गये अपने प्रथम प्रवचन में ही कहा "भिक्षुओं, जो प्रव्रजित हैं, उसे दो अतियों से, सीमा पर पहुँचे दो प्रकार के आचरण से सर्वथा दूर ही रहना चाहिये। काम-भोग प्रधान जीवन से, क्योंकि यह दुर्बल बनाने वाला है, गंवारपन है, कमीनापन है और किसी काम का नहीं। दूसरा निज-पीड़ा प्रधान जीवन, क्योंकि यह दुःखद होता है, व्यर्थ होता है और बेकार होता है।" इन दोनों अतियों से बचे रहकर ही तथागत ने मध्यम मार्ग का अविष्कार किया है। यह मध्यम मार्ग साधक को अंतर्दृष्टि प्रदान करने वाला है, बुद्धि देने वाला है, ज्ञान देने वाला है, शान्ति का दाता है और निर्वाण तक पहुँचा देने वाला है। यह मध्यम मार्ग कौन सा है? यही श्रेष्ठ आष्टांगिक मार्ग है। भगवान बुद्ध का कहना है कि मानव इस मार्ग को अपनाकर दुःखों से मुक्त हो सकते हैं। वर्तमान समय में धन-सम्पत्ति, पति को पत्नी, पिता-माता को पुत्र-पुत्री, भाई को भाई, मित्र को मित्र रहने के बाद भी मानव के अन्दर एवं बाहर शान्ति नहीं है। मानव को पर्याप्त धन-सम्पत्ति रहने के बाद भी क्यों शान्ति नहीं है, शान्ति नहीं रहने का क्या कारण है। जिनके पास धन सम्पत्ति पर्याप्त है उनको भी शान्ति नहीं है, जिनके पास धन-सम्पत्ति नहीं है उनको भी वर्तमान समय में शान्ति नहीं है। शान्ति आखिर मानव को कैसे मिले, इसके लिये भगवान बुद्ध ने मानव को आठ मार्ग (आष्टांगिक मार्ग) को अपने जीवन में पालन करने के लिये बताया है। इस मार्ग को अपनाकर मानव अपने दुःख से मुक्त हो सकते हैं। इस मार्ग के निम्नलिखित आठ अंग हैं-

(१) सम्यक् दृष्टि (२)सम्यक् संकल्प (३)सम्यक् वाक् (४)सम्यक् कर्मान्त (५)सम्यक् आजीविका (६)सम्यक् व्यायाम (७)सम्यक् स्मृति (८)सम्यक् समाधि।<sup>13</sup>

अब एक-एक करके उक्त आठों मार्गों का वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है। यथा-

(१) **सम्यक् दृष्टि (उचित दृष्टि)**-वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को जानना ही 'सम्यक्दृष्टि' कहा जाता है सम्यक् दृष्टि का अर्थ बुद्ध के चार आर्य-सत्यों का यथार्थ ज्ञान है। सम्यक् दृष्टि प्राप्त होने पर व्यक्ति भले और बुरे कर्मों में अंतर समझ लेता है। अहिंसा, अस्तेय, अव्यभिचार, चुगली से दूर रहना, प्रिय वचन, सत्य, निर्लोभ उक्त विषय भले कर्म है। हिंसा, स्तेय, व्यभिचार या चुगली करना या

सुनना, कटु वचन, झूठ, लोभ आदि बुरे कर्म हैं। भगवान बुद्ध कहते हैं कि मानव जब सम्यक् दृष्टि को अच्छी तरह जान जाता है तो उसे जीवन में हमेशा शांति मिलती है।

(२) **सम्यक् संकल्प**-भगवान बुद्ध के चार आर्य सत्यों का जीवन में पालन करने का निश्चय ही सम्यक् संकल्प है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जो अशुभ है उसे न करने का संकल्प ही सम्यक् संकल्प है। सम्यक् संकल्प में त्याग और परोपकार की भावना निहित है।

(३) **सम्यक् वाक् (उचित वचन)**-भगवान बुद्ध का मत है कि मानव को शान्ति चाहिये तो उन्हें सम्यक् वाक् का पालन करना चाहिये। जिस वचन से दूसरों को कष्ट हो उसका परित्याग करना चाहिये। मानव को शांति तभी मिल सकती है, जब वह निरन्तर सत्य और प्रिय वचन बोले।

(४) **सम्यक् कर्मान्त (उचित कर्म)**-बौद्ध धर्म में कहा गया है कि मानव को हमेशा सम्यक् कर्म करना चाहिये। सम्यक् कर्मान्त का अर्थ है बुरे कर्मों का परित्याग। भगवान बुद्ध के अनुसार बुरे कर्म तीन हैं- हिंसा, स्तेय, इन्द्रिय-भोग। मानव को अच्छे कर्मों का पालन करना चाहिये। दूसरे जीवों की हिंसा नहीं करना (अहिंसा), दूसरे की सम्पत्ति को नहीं चुराना (अस्तेय), इन्द्रिय-सुख का त्याग करना (इन्द्रिय-संयम) ही सम्यक् कर्मान्त कहा जाता है।

(५) **सम्यक् आजीविका**-सम्यक् आजीविका का अर्थ है-ईमानदारी से जीविकोपार्जन करना। धोखा, रिश्वत, लूट, अत्याचार आदि अशुभ उपायों से जीविका निर्वाह करना महान् पाप है। भगवान बुद्ध कहते हैं कि मानव को तभी शान्ति मिल सकती है जब वह सम्यक् आजीविका का पालन करें।

(६) **सम्यक् व्यायाम**-मन में शान्ति हो, इसके लिये चार प्रकार के प्रयत्नों का पालन आवश्यक माना गया है। यथा- (१) पुराने बुरे विचार को मन से बाहर निकालना (२) नये बुरे विचार को मन में आने से रोकना (३) अच्छे भावों को मन में भरना (४) इन भावों को मन में कायम रखने के लिये सतत क्रियाशील रहना ही सम्यक् व्यायाम कहलाता है। भगवान बुद्ध का मत है कि यदि मानव सम्यक् व्यायाम को अपने जीवन में पालन करे तो उन्हें अवश्य मन में शान्ति मिलेगी।

(७) **सम्यक् स्मृति**-सम्यक् स्मृति का अर्थ है वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के सम्बन्ध में जागरूक रहना अभी तक जिन विषयों का ज्ञान हो चुका है उन्हें सदैव स्मरण रखना परम आवश्यक है।<sup>14</sup>

(८) **सम्यक् समाधि**-अष्टांगमार्ग का अन्तिम सौपान सम्यक् समाधि है। चित्त की एकाग्रता ही समाधि है। बौद्ध दर्शन के अनुसार सम्यक् समाधि द्वारा मन के विकल्पों को त्यागा जा सकता है। बौद्ध दर्शन में समाधि की चार अवस्थाएँ बताई गयी हैं-

क) **प्रथम अवस्था**-समाधि के प्रथम अवस्था में सम्यक् ज्ञान द्वारा प्राप्त सत्यों पर ध्यान देना, उनका मनन एवं चिन्तन करना आवश्यक है। समाधि के प्रथम अवस्था में विरक्ति एवं शुद्ध विचार के कारण एक अपूर्व शान्ति एवं आनन्द की अनुभूति होती है।<sup>15</sup>

ख) **द्वितीय अवस्था**-इस अवस्था में साधक को तर्क एवं वितर्क की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। इस अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की अनुभूति होती है।

ग) **तीसरी अवस्था**-तीसरी अवस्था में आनन्द एवं शान्ति की चेतना का अभाव हो जाता है, परन्तु आराम का ज्ञान विद्यमान रहता है।

घ) चौथी अवस्था—इस अवस्था में चित्त-वृत्तियों का पूर्णतया निरोध हो जाता है। शरीर के आराम एवं शान्ति का भाव भी नष्ट हो जाता है।<sup>१७</sup>

शान्ति मानव को कैसे मिल सकती है, इस विषय में आचार्य अश्वघोष ने अपने सौन्दरनन्द महाकाव्य में उल्लेख किया है। सौन्दरनन्द महाकाव्य के एकादश सर्ग में शान्ति के विषय में आचार्य अश्वघोष ने लिखा है—

**अतृप्तौ च कुतः शान्तिरशान्तौ व कुतः सुखम् ।**

**असुखे च कुतः प्रीतिप्रीतौ च कुतो रतिः ॥३३॥**

अर्थात् अतृप्ति में शान्ति कहीं, अशान्ति में सुख कहीं, सुख न होने पर प्रीति कहीं और प्रीति न होने पर (आनन्द) कहीं अर्थात् तृप्ति के अभाव में आनन्द नहीं प्राप्त हो सकता।

**रिरंसा यदि ते तस्माद्ध्यात्मे धीयतां मनः ।**

**प्रशान्ता चानवद्या च नास्त्यध्यात्मसमा रतिः ॥३४॥**

यदि तुम आनन्द चाहते हो तो अध्यात्म में मन लगाओ, क्योंकि शान्त और निर्दोष अध्यात्म के समान दूसरा कोई आनन्द नहीं है।

**मानसं बलवद् दुःखं तर्षे तिष्ठति तिष्ठति ।**

**तं तर्षे छिन्धि दुःखं हि तृष्णा चास्ति न नास्ति च ॥३६॥**

प्रस्तुत श्लोक का भावार्थ यह है कि तृष्णा के रहते हुये प्रगाढ़ मानसिक दुःख रहता है इस लिये तृष्णा को काटो, क्योंकि दुःख और तृष्णा एक साथ आते हैं और एक साथ हो जाते हैं।

**संपत्तौ वा विपत्तौ वा दिवा वा नक्तमेव वा ।**

**कामेषु हि सतृष्णस्य न शान्तिरुपपद्यते ॥३७॥**

अर्थात् सम्पत्ति में अथवा विपत्ति में, दिन में अथवा रात में विषयों में तृष्णा रखने वाले को भी कभी शान्ति नहीं होती है।<sup>१८</sup>

अतः संसार के अन्य धर्मों की तुलना में बौद्ध धर्म को सबसे शान्तिप्रद और अहिंसा वाला माना जाता है जिसमें प्राणिमात्र के कल्याण एवं उसके दुःखों का निरोध की तथागत बुद्ध द्वारा अप्रतिम व्यवस्था दी गयी है। बौद्ध धर्म एवं दर्शन जिस सिद्धान्त पर आधारित है उसकी आधारशिला ही अहिंसा एवं शान्ति है। बुद्ध के समस्त उपदेशों का सार बिना किसी को कष्ट पहुँचाए उसे दया, करुणा, शील और शान्ति की ओर प्रेरित करना है। तथागत के उपदेश और कालान्तर में बौद्ध दर्शन की निरन्तरता और देश-विदेशों में उसके व्यापक प्रसार का यही मूल कारण है। इसलिये वर्तमान विश्व में भी विश्व-शान्ति और सद्भाव के लिये आर्य सत्त्यों और उसके अनुगामी मार्गों का पालन प्रासंगिक है और उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। विधि-निर्माण और समाज-निर्माण में इन उदात्त सिद्धांतों का प्रयोग करके आज के समाज को शान्तिपूर्वक प्रगति-पथ पर अग्रसर किया जा सकता है।

**! भवतु सब्ब मंगलम् !!**

**सन्दर्भः**

- १ पी.वी बापट बौद्ध धर्म के २५०० वर्ष, पृष्ठ-२३७
- २ दीघनिकाय (दूसरा भाग), विपश्यना विशोधन विन्यास,(१६६८), पृ. -५
- ३ डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, धर्म-दर्शन की रूप-रेखा (द्वितीय खण्ड), पृ.-५
- ४ आ. बलदेव उपाध्याय, बौद्ध दर्शन मीमांसा, पृ.-४५
- ५ डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, धर्म-दर्शन की रूप-रेखा (द्वितीय खण्ड), पृ.-१६
- ६ डॉ. आर.पी.शर्मा, भारतीय दर्शन, पृ.५४
- ७ डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारतीय दर्शन की रूपरेखा पृ.-१२०
- ८ आ. अश्वघोष कृत,(प्रो.रामशंकर त्रिपाठी, सम्पादक), सौन्दरनन्द महाकाव्य पृ.१२०